आधुनिक हिंदी कविता में विश्व इतिहास की झलकियाँ
(प्रमुख राजनीतिक घटनाओं के सन्दर्भ में)

-इंदरप्रीत कौर

आलेख का सार-

आधुनिकता एक अवधारणा है जिसकी अनुगूँज समाज के साथ-साथ साहित्य में भी सुनाई देती है | यह आधुनिकता राष्ट्र की सीमाओं के बंधन को तोड़कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी फलित होती है | ऐसे में आधुनिक साहित्य न केवल राष्ट्र की घटनाओं से बल्कि अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं से भी प्रभावित होता है | किसी भी भाषा में लिखे गए साहित्य का मूल्यांकन करने के लिए, कि वह कितना सामयिक है, जरूरी है कि साहित्य की परिधि का विस्तार किया जायें तथा यह देखा जायें कि साहित्य अपने भीतर वैश्विक घटनाओं को कैसे समाहित करता है तथा उस पर प्रतिक्रिया कैसे करता है | मेरा आलेख आधुनिक हिंदी कविता की वैश्विक समझ को प्रतिबिंबित करने का छोटा सा प्रयास है |

आलेख के मुख्य बिंदु-

- आधुनिकता की अवधारणा को समझते हुए आधुनिक हिंदी कविता की शुरुआत पर चर्चा
- भारतेंदु , द्विवेदी, छायावाद एवं प्रगतिवादी धारा की कविता में अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव एवं उनका चित्रण
- प्रयोगवादी धारा की कविता में कविता का अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक दृष्टिकोण हावीं परंतु राजनीतिक घटनाओं के प्रति उदासीनता
- साठोत्तरी कविता में पुनः वैश्विक दृष्टिकोण की स्थापना एवं वैश्विक राजनीतिक घटनाओं के प्रति जागरूकता तथा उनका चित्रण

मुख्य आलेख- "जबकि प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब होता है, तब यह निश्चित है कि जनता की चित्तवृत्ति के परिवर्तन के साथ साहित्य के स्वरुप में भी परिवर्तन होता चला जाता है |"[1] यह कथन रामचंद्र शुक्ल के हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन का आधार रहा है | उन्होंने देशकाल की परिस्थितियों को साहित्य इतिहास लेखन में सबसे अधिक महत्ता प्रदान की परन्तु कभी- कभी साहित्य अपनी भौगोलिक सीमाओं को लाँघकर अपनी पहुँच अंतराष्ट्रीय स्तर तक ले जाता है | ऐसे में किसी भी साहित्य का मूल्यांकन देशकाल के साथ- साथ अंतराष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर होना अति आवश्यक है | मेरे इस लेख का उद्देश्य आधुनिक हिंदी कविता में अंतराष्ट्रीय घटनाओं के प्रभाव को देखना है | इन वैश्विक घटनाओं में भी मैंने कुछ प्रमुख घटनाओं को चिह्नित किया है और इसकी सीमा आधुनिक कविता से खींचने का मेरा उद्देश्य

मात्र यही है कि इससे पूर्व की कविता मध्यकालीन रूढ़िगत संस्कारों से बंधी हुई थी जहाँ देश से बाहर होने वाली घटनाओं के प्रति तटस्थता का भाव था और यही भाव हमारी परतंत्रता का कारण 19वीं सदी में रहा |

सबसे पहले प्रश्न यह है कि आधुनिक हिंदी कविता किसे कहा जाये ? ऐसे में रामस्वरूप चतुर्वेदी के 'हिंदी साहित्य एवं संवेदना का इतिहास' का आंकलन करना जरूरी हैं | उनका मानना है कि आधुनिकता का प्रारंभ दो विसादृश्य संस्कृतियों की टकराहट से ही होता है | चूँकि मध्यकाल में भारतीय संस्कृति की इस्लामी संस्कृति से टकराहट सामाजिक समानता के आधार पर तो हुई परन्तु यह टकराहट मूल्यों व तार्किकता पर आधारित नहीं था | बाद में ब्रिटिशों के आगमन से पूर्वी संस्कृति की टकराहट पश्चिमी संस्कृति से हुई जो तर्क व विज्ञान पर आधारित थी | इसने आधुनिकता को जन्म दिया | यह टकराहट व अंतर्द्वंद्व जहाँ से मिलना प्रारंभ होता है वहाँ से हम आधुनिकता का प्रारंभ मान सकते है | "पुनर्जागरण का एक चिह्न यदि दो-जातीय संस्कृतियों की टकराहट है तो दूसरा चिह्न यह भी कहा जायेगा कि वह मनुष्य के सम्पूर्ण तथा संश्लिष्ट रूप की खोज, और उसका परिष्कार करना चाहता है |"[2]

हिंदी कविता में इस आधुनिकता का प्रारंभ भारतेंदु काल से होता है | इस काल में द्वंद्व कई स्तरों पर दिखाई देता है, कभी देशप्रेम व राजप्रेम को लेकर, कभी कविता की भाषा व विषयवस्तु को लेकर तो कभी शिक्षा के माध्यम व भारत जागरण के कारणों को लेकर | "उस समय का राष्ट्रिय परिदृश्य ही नहीं, साहित्यिक परिदृश्य भी अंतर्विरोधों से ग्रस्त था | भारतेंदु युग उस संधि स्थल पर खड़ा है, जहाँ पर रीतिकाल समाप्त हो रहा है और आधुनिक काल का सूत्रपात हो रहा है |"[3]

यदि हम इस काल की समयावधि, जो कि सन्1850-सन् 1900 तक ठहरती है, की अंतराष्ट्रीय घटनाओं के आधार पर तुलना करें तो हम पायेंगे इस समय यूरोप में इंग्लैंड का औद्योगिक विकास पूर्ण हो चुका था | वह अपने माल के निर्यात हेतु नए बाजार को खोज रहा था जिससे उसकी साम्राज्यवादी आकाँक्षायें पूर्ण हो | इसके लिए वे अपने उपनिवेश जैसे कि भारत के सिपाहियों का प्रयोग भी कर रहा था | इसका प्रमाण हमें 1881ई॰ में भारतेंदु द्वारा रचित कविता 'विजय वल्लरी' जिसमें ब्रिटिशों द्वारा अफगानों पर विजय का उल्लेख है, जिसमें बड़ी संख्या में भारत के सिपाहियों का प्रयोग हुआ था, का चित्रण है | इसी तरह 1884 ई॰ में रचित 'विजयनीविजय वैजयंती' में ब्रिटिशों द्वारा मिस्त्र विजय का वर्णन है | "'विजयिनीविजय वैजयंती' में, जो मिस्त्र में भारतीय सेना की विजय प्राप्ति पर लिखी गई थी, देशभक्ति व्यंजक कैसे भिन्न-भिन्न संचारी भावों का उद्गार है | कहीं गर्व, कहीं क्षोभ, कहीं विषाद | 'सहसन बरसन सों सुन्यो जो सपने नहीं कान, सो जय आरज शब्द' को सुन और 'फरकि उठीं सबकी भुजा, खरकि उठीं तरवार | क्यों आपुहिं ऊँचे भये आर्य मोछ के बार' का कारण जान, प्राचीन आर्यगौरव का गर्व कुछ आ ही रहा था कि वर्तमान अधोगति का दृश्य ध्यान में आया और फिर

वही 'हाय भारत' |"[4] यहाँ भी भारतीय सिपाहियों के साहस के कारण ही यह प्रयोग सफल रहा | इसी तरह भारतेंदु ने महारानी विक्टोरिया के पति की मृत्यु पर, महारानी के पुत्रागमन पर, 1871ई॰ में प्रिंस ऑफ़ वेल्स के बीमार पड़ने पर, 1875 ई॰ में उनके भारत आगमन पर कवितायें लिखी, जैसे- "पहरू नहीं कोउ लखि परे, होए अदालत बंद | ऐसा निरुपद्रव करो,राजकुमार सुखकंद |"[5]

इसी से आगे बढ़कर हिंदी कविता द्विवेदी युग में प्रवेश करती है | यह युग स्पष्टता का युग है | स्पष्टता साम्राज्यवाद को लेकर, अपनी समस्याओं को लेकर, कविता की विषयवस्तु व भाषा को लेकर | यह युग सांस्कृतिक पुनरुत्थान का युग माना गया है जिसका आधार प्राचीन भारत था | यद्यपि इस युग में वैश्विक घटनाओं की सीधी- सीधी अभिव्यक्ति कविता में नहीं होती है परन्तु जो सांस्कृतिक पुनरुत्थान की भावना पाई जाती है उसका बहुत बड़ा कारण 1890 ई॰ में इथियोपिया के हाथों इटली की पराजय यानी एक छोटे से देश द्वारा बड़े साम्राज्यवादी देश को परस्त करना, इस घटना ने भारतीयों पर गहरा प्रभाव डाला | उन्होंने महसूस किया कि जब इटली जैसा देश पराजित हो सकता है तो ब्रिटिश क्यों नहीं भारतियों से पराजित हो सकते? बस जरुरत आत्मविश्वास जगाने की है | यह आत्मविश्वास जगाने की भावना ही पूरे द्विवेदी काल में सांस्कृतिक पुनरुत्थान के रूप में सामने आती है | मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'भारत भारती' इसका प्रमाण है | पौराणिक आख्यानों को मानवीय रूप देने का कार्य भी इसी दिशा की तरफ उठाया गया कदम था ताकि लोगों को बताया जा सकें कि वे पौराणिक पुरुष कोई अवतार नहीं अपितु सामान्य मानव थे, यदि वे दुष्टों का दमन अकेले कर सकते हैं तो हम क्यों नहीं ? विश्वपटल पर दूसरी प्रमुख घटना 1905 ई॰ में जापान के हाथों रूस की पराजय ने भी यही प्रभाव उत्पन्न किया | जापान जो कि उस समय उभरता हुआ नवजात देश था जिसके पास न तो पूँजी की क्षमता थी न ही साम्राज्यवादी एजेंडा, उसने अपनी दृढ इच्छाशक्ति व कुशल सैन्य संचालन से एक बड़े राष्ट्र रूस को पराजित कर दिया था | "इस युद्ध ने दूसरे रूप से भी जापानी साम्राज्यवाद को प्रोत्साहित किया | सम्पूर्ण युद्ध की अवधि में जापान का औद्योगीकरण अपनी अबाध गति से होता रहा | जिस समय यूरोप की महाशक्तियाँ यूरोपीय युद्ध में फँसी थी, जापान ने कई बाजारों पर अधिकार कर लिया |"[6]

द्विवेदी युग की समाप्ति प्रथम विश्वयुद्ध के समापन से कुछ पूर्व होती है | प्रथम विश्वयुद्ध पूरी तरह से साम्राज्यवादी युद्ध था जिसका समापन 1919 में होता है, इससे पूर्व ही रूसी क्रांति संपन्न हो जाती है, जार की तानाशाही सत्ता का समापन कर लेनिन के नेतृत्व में समाजवादी सरकार की स्थापना होती है | लेनिन के सत्ता में आते ही रूस सबसे पहले विश्वयुद्ध से स्वयं को अलग कर लेता है, अपने अधीन राज्यों को स्वतंत्र कर देता है, व्यक्तिगत पूँजी को समाप्त कर संपत्ति का राष्ट्रीयकरण किया जाता है | यह सब बातें सम्पूर्ण विश्व को चकाचौंध कर देती हैं, पूँजीपति देश इस विचारधारा से इतना भयभीत हो जाते है कि वे इसके प्रसार को रोकने का हर

उपाय करने लगते हैं | इन सब हलचलों से न भारत अछूता रहता है न ही आधुनिक हिंदी कविता | आधुनिक हिंदी कविता का यह दौर छायावादी युग के नाम से जाना जाता है | हालांकि इस कविता में रहस्यवाद व लाक्षणिकता की बात कह इसे युग निरपेक्ष कविता माना गया परंतु हम नामवर सिंह की 'छायावाद' पुस्तक का अध्ययन करें तो हमें यह देखने को मिलेगा कि इस कविता में युग की अनुगूँज स्पष्ट सुनाई पड़ती है | "छायावादी कवि की भारत भूमि ऐसी है कि जिसमें क्षितिज को भी एक नया सहारा मिलता है और अनंत की लहरों को भी किनारा प्राप्त होता है | भावुक देश प्रेम से भी आगे बढ़कर छायावादी कवियों ने देश की स्वतंत्रता के लिए उद्बोधन गीत लिखें | इस प्रकार छायावादी कवियों ने स्पष्ट रूप से राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए भी कविताएँ लिखी |"[7] इसमें निराला, प्रसाद,पंत ने जिस मात्रा में राष्ट्रवादी कविताएँ लिखी उन्हें पढ़कर यही बोध होगा कि यह राष्ट्रवाद सीमित नहीं है अपितु यह हर उस औपनिवेशिक देश को संबोधित कर रहा है जहाँ साम्राज्यवादी ताकतों से मुक्ति हेतु संघर्ष चल रहा है | छायावाद का अंत होते- होते यह प्रवृत्ति, जो धुँधली थी, वो पूरी तरह से स्पष्ट हो गयी |

वैश्विक घटनाओ की सबसे ज्यादा अनुगूँज हमें छायावादोत्तर काल में सुनाई पड़ती हैं जिसमें प्रगतिवाद का अपना महत्त्व है | यहाँ प्रगतिवादी कविता का मुख्य उदेश्य रूसी क्रांति जैसी हूबहू क्रांति अपने देश में करना है | ये कविता स्पष्ट रूप में रूस की तारीफ में कसीदें भी गढ़ती है | शिवमंगल सिंह सुमन की कविता 'चली जा रहीं है बढ़ी लाल सेना' एवं रामधारी सिंह दिनकर की कविता 'दिल्ली और मास्को' इसी भाव को प्रदर्शित करती है जैसे- 'जय विधायके अमर क्रांति की, अरुण देश की |' यही कारण रहा कि प्रगतिवाद पर बिना ठोस धरती के क्रांति का आह्वाहन किये जाने को मात्र प्रचार की सामग्री माना गया | हालाँकि इस समयावधि में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने की संभावनाएँ प्रबल हो चुकी थी | हिटलर का नाज़ीवाद, मुसोलिनी का फासिस्म लोगों को आतंकित कर रहा था पर ऐसे समय में भी साम्राज्यवादी देश तब तक चुप रहें जब तक उनकी सीमाओं पर आक्रमण न शुरू होने लगे | कई शांति व्यवस्था की बहाली की कोशिशें की गयी पर इन संगठनो ने न तो नाज़ीवाद न ही साम्राज्यवाद को रोकने का कोई प्रयत्न किया | 1939 ई॰ को द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ होता है जिसमे किसी बात की हानि होती है तो सिर्फ मानवतावाद की | "मोटे तौर पर द्वितीय विश्वयुद्ध ने मनुष्य के लिए कोई नयी समस्या पैदा नहीं की किंतु इसने लगभग सौ साल से चली आ रही कुछ समस्याओं को अधिक कठिन, अधिक महत्वपूर्ण और अधिक खतरनाक अवश्य बना दिया |"[8] इसी दौरान 1946 ई॰ में दिनकर द्वारा 'कुरुक्षेत्र' की रचना की जाती है जिसमें शांति व युद्ध के बीच युद्ध की पक्षधरता ली जाती है क्योंकि ऐसा माना गया कि युद्ध समानता लाने के लिए आवश्यक है-

"सच पूछो, तो शर में ही, बसती है दीप्ती विनय की |

संधि वचन संपूज्य उसी का, जिसमें शक्ति विजय की ||"[9]

पर दिनकर का यह विचार अमेरिका द्वारा 1949 ई॰ में जापान पर परमाणु बम गिराए जाने के साथ ही ध्वस्त हो गया क्योंकि इस हमले ने न केवल वर्तमान मनुष्य के अस्तित्व को संकट में डाल दिया बल्कि आने वाली पीढ़ी से भी जीने का अधिकार छीन लिया | द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति ने समानता के सिद्धांत को कहीं भी लागू नहीं किया और न ही उपनिवेशों को आजादी दिलाई बल्कि इसने विश्व को अधिक गंभीर संकटों में उलझा दिया | इन्ही संकटों को प्रतिबिंबित करता 1953 ई॰ में रचित 'अन्धा युग' काव्य नाटक है जिसे धर्मवीर भारती द्वारा लिखा गया | 'अन्धा युग' उस मनःस्थति को बेहद सूक्ष्म ढंग से महाभारत के अंतिम दिन की घटना से जोड़कर दिखाता है जहाँ युद्ध के न तो कारणों का ज्ञान है, न ही उसके परिणामों का और न ही यह युद्ध किस उद्देश्य से लड़ा जा रहा है, इसकी स्पष्ट जानकारी है | यह पूरी तरह से विश्व पटल पर होने वाले युद्धों के दौर को प्रतिबिंबित करता है |

"ज्ञात क्या तुम्हें है परिणाम इस ब्रह्मास्त्र का ?

यदि यह लक्ष्य सिद्ध हुआ ओ नरपशु !

तो आगे आने वाली सदियों तक, पृथ्वी पर रसमय वनस्पति न होगी,

शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठग्रस्त, सारी मनुष्य जाति बौनी हो जाएगी |"[10]

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद युद्ध थमें नहीं बल्कि बाद का इतिहास युद्धों का ही इतिहास रहा जिसमे शीत युद्ध, अमेरिका का इराक पर हमला एवं अफगानिस्तान पर कब्ज़ा, वियतनाम की अमेरिका के खिलाफ लड़ाई, जर्मनी का विभाजन इत्यादि घटनाओं को शामिल किया जाता है | इसी कारण इस दौर में कई युद्ध कविताओं को लिखा गया जैसे कुँवर नारायण द्वारा रचित 'शांति वार्ता' एवं 'चक्रव्यूह' कविता शामिल है जैसे -"लड़ाकू विमानं, न अन्नं न वस्त्रं, करें शास्त्र चर्चा, मगर होड़ अस्त्रं |"

इसी तरह गोरख पांडे की कविता 'समकालीन', श्रीकांत वर्मा की 'कोसल में विचारों की कमी है', अज्ञेय की कविता 'जो पुल बनायेंगे' में इसी त्रासदी का चित्रण किया गया है | इसी तरह अचुत्यानंद मिश्र की कविता 'बच्चे धर्मयुद्ध लड़ रहें हैं' जिसमे अमेरिका द्वारा दूसरे देशों में चलाये गए सैन्य अभियानों में मारे गए अमेरिकी सैनिकों के अनाथ हुए बच्चों की व्यथा है – 'सच के छूने से पहले, झूठ ने निगल लिया उन्हें, नन्हे हाथ, जिन्हें खिलौनों में उलझना था, खेतों में बम के टुकड़े चुन रहें हैं |'

इस प्रकार आधुनिक हिंदी कविता वैश्विक परिपेक्ष्य में अपनी तटस्थता को त्यागकर सक्रिय भूमिका निभा रहीं है | उसके लिए मानव की व्यथा पहले है, भले वह मानव किसी भी देश, जाति एवं समुदाय का ही क्यों न हो | उसका राष्ट्रवाद एवं मानवतावाद भौगोलिक दायरों में सीमित नही है | यह कथन विचारणीय है- "साहित्य अंततः साहित्य ही है- वह परिस्थितियों के सहित अथवा सम्मिलित प्रभाव की व्यंजना है | साहित्य मानव के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की वाणी है; अविभक्त जीवन की इकाई का प्रतिबिम्ब है |"[11]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. शुक्ल, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, ज्ञान वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संशोधित संस्करण, संवत् 1997, पृ. 12.
2. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, हिंदी साहित्य एवं संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तेइसवां संस्करण 2012, पृ. 80
3. कुमार, सर्वेश, हिंदी साहित्य का इतिहास,सार्थक प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ. 167
4. शुक्ल, रामचंद्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, ज्ञान वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, संशोधित संस्करण, संवत् 1997, पृ. 396
5. कुमार, सर्वेश, हिंदी साहित्य का इतिहास, सार्थक प्रकाशन, दिल्ली, 2012, पृ. 170
6. वर्मा, दीनानाथ, विश्व इतिहास का सर्वेक्षण, भारती भवन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1991, पृ. 372-373
7. सिंह, नामवर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, बारहवीं आवृत्ति, 2013, पृ. 78
8. वर्मा, दीनानाथ, विश्व इतिहास का सर्वेक्षण, भारती भवन, नई दिल्ली, तृतीय संस्करण, 1991, पृ. 544
9. दिनकर, रामधारी सिंह, कुरुक्षेत्र, राजपाल एंड संस,दिल्ली, संस्करण 2014, पृ. 25
10. भारती, धर्मवीर, अन्धा युग, किताब महल, नई दिल्ली, सैतालिसवाँ संस्करण, 2015, पृ. 75
11. सिंह, नामवर, छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, बारहवीं आवृत्ति, 2013, पृ. 77

इंदरप्रीत कौर

अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी

अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश)